उपसंहार

निष्कर्ष रूप से देखने पर महिला संगठनों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएं एवं अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित स्वास्थ्य पत्रिकाओं में महिला स्वास्थ्य की वैचारिक पृष्ठभूमि में पर्याप्त अंतर देखने को मिलता है एक समाज, संस्कार और धार्मिक रूढ़ियों में बंधे महिला स्वास्थ्य की अवधारणाओं का खंडन करती है, तो दूसरी आधुनिकता का जामा पहने परम्पराओं के नाम पर पुरातनपंथी विचारधाराओं को पोषित कर समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता को विस्तार देती है।

स्वास्थ्य की परिभाषाओं से हमने जाना कि प्रत्येक व्यक्ति का शरीरिक विकार, मानसिक तनाव एवं सामाजिक समस्या मुक्त होना आवश्यक है किन्तु यथार्थ के धरातल पर महिलाएँ सामाजिक, पारिवारिक, एवं धार्मिक मान्यताओं का बोझ ढोती आई हैं। जैविक भिन्नताओं के चलते यह मान लिया गया की महिलायें पुरुषों की अपेक्षा शारीरिक रूप से कमज़ोर होती हैं। यदि इस तथ्य को सही मान लिया जाए तो भी महिला स्वास्थ्य को प्राथमिकता मिलनी चाहिए किन्तु पुरुष प्रधान समाज ने अपने वर्चस्व को स्थापित करते हुए महिलाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी प्राथमिकताओं में पुरुष को यौन आनंद पहुँचाने वाली एवं गर्भवती महिला के स्वस्थ होने पर जोर दिया ताकि होने वाली संतान में कोई जन्मजात विकार न हो। हिंदी की स्वास्थ्य पत्रिकाएँ महिला स्वास्थ्य को यौन सुख एवं शिशु पालन की अनिवार्यता पर बल देकर स्त्री के पारम्परिक रूप को प्रमुखता देती है।

आयुर्वेद के नाम प्रकाशित की जाने वाली स्वास्थ्य पत्रिकाएँ एक तरफ स्त्री को धर्म और कर्तव्य की सीख देती हैं तो दूसरी तरफ आधुनिक महिलाओं की छवि का प्रयोग कर बाज़ार में लोकप्रियता एवं पाठक संख्या में वृद्धि पर बल देती है। इस प्रकार ये स्वास्थ्य पत्रिकाएं परंपरावादी होने का अभिनय कर बाज़ारवाद नीतियों से प्रभावित स्वास्थ्य का बाज़ारीकरण कर रही है। पारिवारिक एवं आयुर्वेदिक

स्वास्थ्य पत्रिका होने का दावा करने वाली ये स्वास्थ्य पत्रिकाएँ महिलाओं के स्वास्थ्य को दरकिनार करके महिलाओं के सौन्दर्यवान, गुणवान, चरित्रवान एवं आदर्शवादी महिला होने का बखान करती हैं। ये पत्रिकाएँ महिलाओं के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक भेदभाव को बनाये रखने वाला एक ऐसा माहौल तैयार करी रही है जो केवल सम्पूर्ण और स्वस्थ शरीर वाले लोगों के हित को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इन पत्रिकाओं के विज्ञापनों एवं लेखों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि ये पत्रिकाएँ महिलाओं को सामाजिक मानदंडों पर सम्पूर्ण नारी होने के गुण सिखाने पर अधिक बल देती हैं जो नारीवादी दृष्टिकोण से स्त्री विरोधी अधिक प्रतीत होती है क्योंकि इन स्वास्थ्य पत्रिकाओं के विज्ञापनों में उत्पाद की मांग के अनुसार महिला छवियों का प्रयोग किया जा रहा है | कहीं गहनों में लदी पारंपरिक स्त्री को दिखाया जा रहा है तो कहीं आधुनिक परिधान पहने प्रगतिशील महिला के चित्र का प्रयोग किया जा रहा है जिसका महिला स्वास्थ्य से कोई सम्बन्ध ही नहीं है। 21वीं सदी में महिलाओं ने अपनी यौनिक स्वतंत्रता को वरीयता दी जिसे पुरुष ने महिलाओं की कमज़ोरी बनाकर अपना वर्चस्व कायम किया और महिलाओं को सामाजिक व्यवस्था में दूसरे दर्जे का स्थान दिया। पुरुष मानसिकता से पल्लवित इन स्वास्थ्य पत्रिकाओं के स्वरुप को देखकर यह निश्चित हो जाता है कि महिलाओं की यौनिक आज़ादी से सर्वाधिक खतरा पुरुष वर्ग को है जिसे बनाए रखने का प्रयास ये स्वास्थ्य पत्रिकाएँ करती दिखाई दे रही है|

पत्रिकाएं पथ प्रदर्शक का कार्य करती है किन्तु सन् 1990 के बाद उदारवाद का जो दौर आया उसने पत्रिकाओं का लक्ष्य लाभ कमाना तय कर दिया। जिसका प्रभाव आयुर्वेदिक स्वास्थ्य पत्रिकाओं पर पर्याप्त पड़ा। एक तरफ इन पत्रिकाओं में महिलाओं स्वास्थ्य का उपचार घर की रसोई में उपलब्ध जड़ी बूटियों के माध्यम से करके स्वास्थ्य के नाम पर महिलाओं को घर, परिवार, एवं बच्चों के पालन पोषण की शिक्षा देती है दूसरी तरफ निजी कम्पनियों के उत्पाद का प्रचार करने के लिए आधुनिकता से परिपूर्ण महिलाओं की छवियों का प्रयोग कर बाज़ार में अपनी लोकप्रियता को बढ़ावा देते नज़र आते है

जिससे इन पत्रिकाओं का दोहरा चरित्र उभर कर सामने आता है। इन्ही के समकक्ष प्रकाशित होने वाली नारीवादी पत्रिकाओं ने महिला स्वास्थ्य के जिन मुद्दों को हमारे सामने रखा उसने समाज, परिवार, धर्म के साथ-साथ सरकारी नीतियों के उद्देश्य को साफ़ कर दिया। महिला संगठन की पत्रिकाओं में महिला स्वास्थ्य को गर्भधारण एवं शिशु पालन के सामाजिक दृष्टिकोण से अलग कर महिलाओं के स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। आयुर्वेदिक स्वास्थ्य पत्रिकाओं में महिला स्वास्थ्य को जिन सामजिक, धार्मिक रीतियों तक सिमित कर दिया गया है महिला संगठन की पत्रिकाएँ इसी सीमितदायरे का विरोध कर महिलाओं को पितृसत्ता की रणनीतियों से अवगत कराती दिखाई देती है। भारतीय सामाज, संस्कृति व रूढ़ परम्परा केनाम पर हमर पुरुष वर्ग महिलाओं को उनकी यौन सुरक्षा का हवाला देकर जन्म से ही उनका शोषण करना शुरू कर देता है। मासिक धर्म के शुरू होते ही महिलाओं को अपवित्र और अशुद्ध मानकर तमाम धार्मिक आडम्बरों के बोझ डालकर उन्हें हीनता का एहसास करवाया जाता है। तो विवाह उपरांत लड़का होगा या लड़की की इच्छा में लिंग जांच करवा कर महिला सहमती के बिना उनके स्वास्थ्य को अनदेखा करते हुए गर्भपात करवा दिया जाता है। इन पत्रिकाओं में महिलाओं के शरीर पर अपना अधिकार एवं कोख के अधिकार को उठाकर इन पत्रिकाओं में पितृसत्ता की अवसरवादी नीतियों के प्रति जागृत करने का सफल प्रयास किया गया है।

इसी के साथ इन पत्रिकाओं में ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य, श्रमिक वर्ग की महिलाओं के स्वास्थ्य, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन करने वाली महिलाओं के स्वास्थ्य के बिन्दुओं को दिखाकर ये पत्रिकाएँ सरकारी योजनाओं का आइना दिखाती है। ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ गाव के अपर्याप्त साधनों के चलते शहरो की ओर उन्मुख होती हैं जहाँ न उनके रहने का कोई स्थायी स्थान होता है न खाने-पीने की व्यवस्था। ऐसे में महिलायें अक्सर कम वेतन पर फैक्ट्री आदि में कार्य करने को राज़ी हो जाती है। जहाँ उन्हें कार्य करने के बदले वेतन देने की सुविधा के आलावा कोई लाभ नहीं दिए जाते।

शहरों में जहाँ पानी तक का भाव देना होता है वहां इन महिलाओं का जीवन निर्वाह अत्यंत कठिन हो जाता है। अनभिज्ञता के चलते सरकारी योजनाओं एवं सरकारी अस्पतालों की सुविधाओं से वंचित होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। सरकार भी औषधी बनाने वाली विदेशी कम्पिनयों को अवसर प्रदान कर गर्भनिरोधकों एवं तकनीकों से लाभ कमाने का अवसर नहीं छोड़ती। महिला संगठन की पत्रिकाओं में हमें सरकार की इन बाज़ारवादी नीतियों की आलोचना के साथ उनका विरोध प्रदर्शन दिखाई देता है। शायद इसीलिए कहा जाता है कि एक महिला ही महिलाओं की समस्याओं के आधार एवं कारण को समझ सकती है।

महिला संगठन की पत्रिकाओं एवं आयुर्वेदिक पत्रिकाओं में हमें मूलभूत अंतर दिखाई देता है वह है बाज़ार की लोकप्रियता में वृद्धि एवं लाभ कमाने की लालसा में महिला के जीवन का मूल्य का हनन। नारीवादी पत्रिकाएँ बाज़ार की नीतियों का खंडन करती है जिनका पोषण अन्य स्वास्थ्य पत्रिकाएँ करती दिखाई देती है। चूंकि आयुर्वेद के नाम पर अन्य पत्रिकाएँ बाज़ार में निरंतर पाठक संख्या में वृद्धि कर दक्षता हासिल कर चुकी है ऐसे में नारीवादी पत्रिकाओं का महिला स्वास्थ्य जागरण अभियान का विस्तार पाना अति आवश्यक है।